RAINBOW SATHI
रेनबो साथी

We celebrate chidren day as child rights day, we will celebrate happiness equally
rainbow children will vow to make a new world, we will kick out tears and pain
we will make you to hear our voice...we are rainbow

बाल दिवस पर बाल अधिकारों की धूम मचाएंगे, बराबर की खुशियां मनाएंगे,
रेनबो बच्चों का है ऐलान, दुनिया नई बनाएंगे, दुख-दर्द को दूर भगाएंगे,
अपनी आवाज सुनाएंगे...आपको अपना साथी बनाएंगे

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೇನ್ಬೋಸಾಥೀ • রেইনবো সাথী

Prayer   प्रार्थना   ప్రార్థన

God!
Thank you for this beautiful life as part of creation!

WE believe, we wish, to live in friendship and mutual respect with head held high, in courage and self confidence.

We believe, we wish that all human beings, whether men or women, live in equality, and in happiness, whatever their colour, caste, class, religion, region, language or abilities.

We believe that, we wish to strongly oppose divisive forces and ideologies that spread hatred and divide us and support democratic and non-violent actions for justice, humanity, truth and peace, taking injustice done to others as inflicted on us.

WE believe in, we wish to contribute our mite towards, the building of more humane and free world, in good health and joyful learning and spreading knowledge.

God!

We believe in, and wish to join our tiny hands with the multitude of the people in this ages-old divine journey of love.

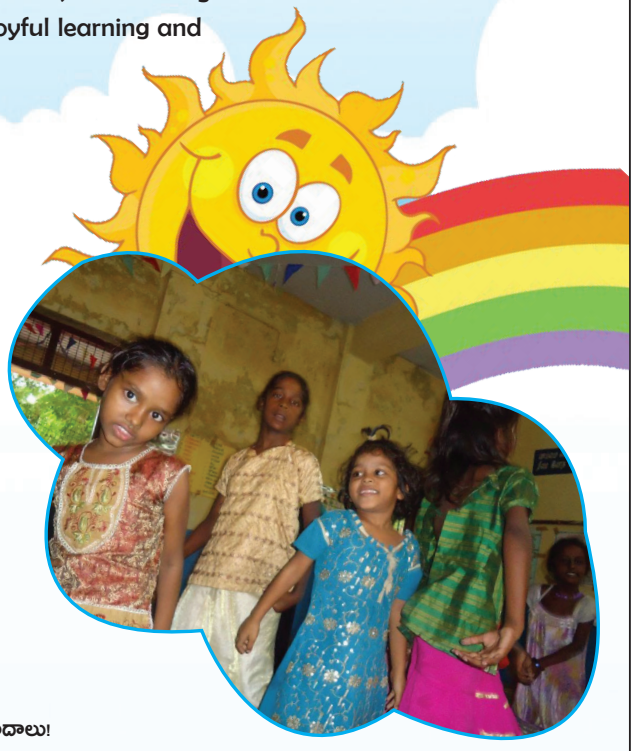

ईश्वर अल्लाह
हमारी ये दुआ है कि इस दुनिया में कोई भी बच्चा ना हो जिसे भोजन प्यार सुरक्षा और शिक्षा न मिले और यह भी प्रार्थना हैं कि हम अपने आस पास सबकी जिंदगी में खुशी की रोशनी भर दे।

దైవమా!
సృష్టిలో బాగంగా మాకిచ్చిన ఈ అందమైన జీవితం కోసం నీకు ధన్యవాదాలు!
మేమెంతా నిర్భయంగా తలెత్తుకొని ఆత్మాభిమానాలతో, పరస్పర గౌరవాలతో స్నేహంగా బ్రతకాలని నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము!

స్త్రీలైనా, పురుషులైనా, వారి రంగు, కులం, మతం, వర్గం, సామర్ధ్యం, బాషా ప్రాంతం, ఏదైనా, మనుష్యులందరమూ సమానమేనని, నవ్వుతూ జీవించాలని నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము!

మమ్మల్ని విడదీసే ద్వేషపూరిత శక్తులను, సిద్ధాంతాలను బలంగా వ్యతిరేకిస్తున్నాము. ఇతరులకి జరిగిన అన్యాయాన్ని మాకే జరిగిందని భావిస్తూ, మానవత, న్యాయం, సత్యం, శాంతి, అహింస, ప్రజాస్వామ్య విలువలును నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము!

మరింత మానవీయ స్వేచ్ఛా ప్రపంచ నిర్మాణంలో, ఆరోగ్యంగా ఆడుతూ, పాడుతూ, జ్ఞానాన్ని పెంచుకొంటూ, పంచుకొంటూమేము సైతం అంకితమవ్వాలని, నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము..!

దైవమా!
అనాదిగా సాగుతున్న, ఈ దివ్య ప్రేమపూరిత యాత్రలో, లక్షలాదిమందితో మా చిన్ని చేతులను కూడా కలపాలని, నమ్ముతున్నాము, కోరుకొంటున్నాము...!

TEAM Work
Year 1, Issue 1
November 2016

ADVISIORY BOARD
K. LALITHA,
T.M. KRISHANA
GEETA RAMASWAMY
MAITREYI PUSHPA
K. ANURADHA

EDITOR IN CHIEF
BHASHA SINGH

EDITORIAL BOARD
AMBIKA, DEEPTI
BEZWADA WILSON
CHANDA
(DELHI)
SAHITYA
(HYDERABAD)
SHIVAM
(PATNA)
S KUMAR
(HYDERABAD)

CHILD JOURNALIST
SUMMI, DELHI
DEEPAK, DELHI
SABITHA, HYDERABAD
A KUMAR, HYDERABAD
NAGA LAXMI, HYDERABAD
BHAVANI, CHENNAI
KAJAL, PATNA
BINDU, PATNA
ASMA, PUNE

CITIZEN JOURNALIST
ARTI SINGHASAN, DELHI
DIVYA, HYDERABAD
CHAKRAVARTHY KUNTOLLA, HYDERABAD
PRIYA, CHENNAI
KHUSHBOO, PATNA

हम बोलें दुनिया सुने...

दोस्तो

रेनबो साथी यानी रेनबो में रहने वालों, रेनबो चलाने वालों, रेनबो के दोस्तों, मदद करने वालों, साथ खड़े लोगों का मंच। यहां हम सब मिलकर थोड़ी गप्पें करेंगे। थोड़ी बातें करेंगे, अपने बारे में, अपने अनुभवों के बारे में, अपने भविष्य के बारे में, किताबों के बारे में, पढ़ाई के बारे में...और हां, अपने समाज और देश के बारे में। हम दुनिया को बताएंगे कि हमारे पास अनुभवों, प्रयोगों और साहस की जो थाती है, वह किसी के पास नहीं है। असल भारत के रंग हमारे सपनों में हैं, जिसे इंद्रधनुष (रेनबो) की शक्ल में रेनबो साथी चारों तरफ फैलाएगा।

बच्चों की दुनिया, बड़े होते बच्चों की दुनिया के कितने अलग-अलग चेहरे, आयाम होते हैं, ये हम अपने हमउम्र बच्चों को भी रेनबो साथी के जरिए बताना चाहते हैं। सड़क पर रहने वालों, भीख मांगने वालों, घरों में झाड़ू पोछा करने वालों, घरेलू हिंसा का शिकार, दंगों के शिकार, भूख से त्रस्त, मैला ढोने वालों...के हम हैं बच्चे । हम खुद को बुलंद कर अपनी तकदीर बदल रहे है। हमारा यह इतिहास, हमारी ये कहानियां, हमारी जिंदगियां, हमारा ये अनोखा सफर, हम सबको बताने आए हैं। हमारा यह पहला कदम है, लेकिन हम बढ़ते ही जाएंगे क्योंकि हमारे पास खोने के लिए कुछ नहीं है और पाने के लिए सारी दुनिया है। हम चाइल्ड जर्नलिस्ट (18 साल से कम उम्र) और सिटिजन जर्नलिस्ट (18 से अधिक) की नई भूमिकाओं में दिखेंगे और समाज की नब्ज टटोलेंगे। हम अपनी धुन के पक्के हैं, थोड़े जिद्दी थोड़े कच्चे है। खामोश नहीं हम बैठते हैं। अपनी बातें सुनाकर ही मानेंगे। खींचेंगे हम डोर बराबरी की, शिक्षा के अधिकार की, भोजन की गारंटी की यानी कि सच्चे-समूचे लोकतंत्र की।

हम सब एक-दूसरे का हाथ पकड़कर, जोड़ेंगे कड़ी से कड़ी। भूख, गरीबी, गैर-बराबरी-छुआछूत-पितृसत्ता-नफरत-युद्ध से मुक्त दुनिया बनाने के लिए ही हमने कलम उठाई है। हंसी-खुशी पर सभी बच्चों के बराबर के हक के लिए की है अपनी आवाज बुलंद। हमारे आपके बीच रिश्ता है दोस्ती, शिक्षा की डोर से हम पतंग जैसे पहुंच जाएंगे आसमान तक...हमें भरोसा है कि आप हैं हमारे साथ, हैं न आप भी रेनबो साथी ! हैं न, सच्ची-मुच्ची...

We speak world listens

Friends
Rainbow Sathi is a creative platform of all those who are living in rainbow homes; people who are running homes; friends of rainbow homes and supporters. We will talk about ourselves, our experiences, our future, books... and of course about our society and country. Colours of real India are in our dreams. Rainbow Sathi will spread these dreams across. We have taken a new role of child journalist (below 18) & citizen journalist (above 18) & we will knock your door soon. World of children has many aspects, this is not homogenous. This is what we want to share with other children. We are kids of rag pickers, beggars, domestic workers, victims of communal-caste and domestic violence, manual scavengers...etc. We are changing our fate by ourselves. We want to share with you our history, our stories, our journey and our struggle because we strongly believe that without us India is incomplete. This is our first step and we will keep walking. There is nothing for us to lose, but the whole world to win. We want a world of equality & justice which is free of hunger and exploitation. We have taken pen to make this place better for every child. We will make you hear us. We are confident that you all are with us... you all are rainbow sathi. Isn't that right!

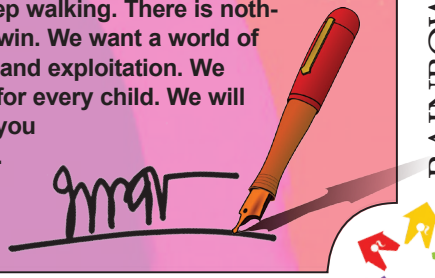

THROUGH MY PEN: *My journey, My world*

"WATCH MY FILM POORNA, COURAGE HAS NO LIMIT"

My name is S.Maria, I am studying in 9th class E/M in Govt high school, Musheerabad. I stay at Aman Vedika Rainbow Home. I was born on 25th Dec 2001, now I am 15 years old. My father died as soon as I was born, my mother joined me to Holy Spirit Children's home. I studied there till 7th class and come out of the school, because my mother met with an accident, and worried a lot. And we both started begging, we used to roam from place to place like Karnataka, Tamilnadu, Kerala, Tirupathi, Renukunta etc. that is why I know 6 languages. And finally we came to Hyderabad. Once we met Suresh sir, who was a rainbow home social mobiliser asked me whether I would study and I accepted, then sir brought me to Rainbow Home. Then underwent Bridge Course for one year and joined in school in 8th class.I met Kabir sir and joined in signing, drama, drawing, story reading group. One day sir said we had to perform a drama in Gandhi Nagar office, we went there and to our surprise we were told that there is no drama, we met film workers. We did not know that. It was our first audition for the film, The audition took place in our rainbow home, the results were announced, that I and other girl Aditi got selected in 500 members. I was very happy & surprised. Then I went to Plaza hotel met Rahul Bose & team, the director of our film "Poorna". The shooting started, it was very enjoyable and exciting. I also went to Sikkim for my shooting, first time I saw snow in my life. It was awesome. Rahul Bosesir was a very nice, very admirable, very inspiring person. All the akkas & annas,(sisters and brothers) encouraged me , sir said mine was a nice and inspiring role in the movie, I then came to know that I was talented in acting. So my goal become acting, besides I love dance, so a

Zumba instructor. I also got chance to go to Delhi for UNICEF meeting in flight first time. I made friends with many people who came from 28 states. I like them so much. Now I may have still more chances waiting for me, but all I want is to reach my goal & stand on my own feet. This is my kind request to you all …Please watch my movie "Poorna, courage has no limit".

मेरा नाम एस मारिया है। मैं कक्षा 9 में पढ़ती हूं, 15 साल की हूं। हैदराबाद के अमन वेदिका रेनबो होम में रहती हूं। मेरा जन्म 2001 में हुआ और इसके तुरंत बाद मेरे पिता का निधन हो गया मेरी मां ने मुझे होली स्पीरिट चिल्ड्रन होम में डाल दिया जहां में सातवीं तक पढ़ी। मेरी मां का एक्सीडेंट हो गया और में स्कूल से बाहर आ गई। हम दोनों भीख मांगने लगे, फिर सुरेश सर के जरिए रेनबो होम आई। ब्रिज कोर्स किया और आठवीं में दखिला लिया। यहां मेने संगीत, नाटक, ड्राइंग सीखना शुरू किया। फिर अचानक फिल्म की दुनिया से दो लोगों की मुलाकात हुई। पहला ऑडिशन हुआ और मैं चुन ली गई, इसी तरह से मैं दूसरे, तीसरे, चौथे और पांचवे ऑडिशन में चुनती चली गई। ऑडिशन हमारे रेनबो होम में ही हुआ। मेरा और अदिति का चुनाव 500 लड़कियों में से हुआ। मैं बहुत खुश और आश्चर्यचकित थी। फिर में अपनी फिल्म *पूरना* के निदेशक राहुल बोस और उनकी टीम से मिलने गई। शूटिंग शुरू हो गई और मुझे जबर्दस्त मजा आने लगा। राहुल बोस बहुत ही अच्छे भले और नेक दिल इन्सान हैं। और वह मुझे लगातार प्रोत्साहित करते है और एक्टिंग में मदद करते है। आप सभी मेरी फिल्म पूरना जरूर देखने आइएगा।

मेरी कलम से: मेरी यात्रा, मेरी दुनिया

दुनिया में अपना झंडा गाड़ना है

ये यात्रा है पूजा राजू की, जिसने दुनिया के सबसे बड़े स्पोर्ट्स इवेंट में सोने के मेडल के साथ-साथ दो सिल्वर मेडल जीते। वर्ष 2015 में लॉस एंजिल्स में हुए स्पेशल ऑलिंपिक में भारत का नाम रोशन करने वाली पूजा राजू दिल्ली के रेनबो होम्स में रहती हैं और तमाम दुश्वारियों को पार करते हुए जीवन को बुलंदियों तक पहुंचा रही है। उनकी कहानी उनकी जुबानी....

जब मैं छोटी थी तो मैं बहुत पहले इटावा से आगे किसी गांव में मम्मी- पापा के साथ रहती थी। मुझे मेरे पापा बहुत मारते थे। मैं पापा की शिकायत करती थी- वह बहुत ड्रिंक करते थे। फिर मम्मी उन्हें डांटती थी और वह मुझे मारते थे। वह मुझे गले में दुपट्टा डाल कर लटका देते और मारते। हर बार मरते-मरते बचती थी। एक दिन मम्मी ने भी बहुत मारा और बोला घर वापिस नहीं आना। उस समय मैं भागकर इटावा जाना चाहती थी- अपनी दादी के पास। मैंने एक आंटी से पूछा था कि इटावा जाने वाली ट्रेन कौन सी है। उन्होंने मुझे बताया और मैं बैठ गयी थी। फिर पुलिस अंकल मिले थे। उन्होंने मुझे पहले एक दिन के लिए पालना में छोड़ा था फिर यहां-दिल्ली होम में ले आये थे। फिर मैं यहां से अमर ज्योति जाने लगी और वहाँ से सर ने मुझे खेलते हुए देखा था।

लॉस एंजिल्स में अपने रेस के बारे में बताओ?

मैंने बहुत तैयारी की। शुरू में प्रैक्टिस में मैं पिछड़ गई तो बहुत रोई। पर मैम ने संभाला। मैंने यह नहीं सोचा कि मुझे जीतना है या हराना है। मैं सिर्फ सोचा कि मुझे सिर्फ अपने खेल पर फोकस करना है। मेरे मन में बस एक बात थी कि रेनबो होम्स का झंड़ा दुनिया में गाड़ना है। दुनिया को पता होना चाहिए कि कैसे हम सड़कों से निकलकर अपनी राह बना रहे हैं। जब मैं जीत गई मेरी दोस्त जसविंदर ने बताया, मैंने उनसे कहा कि आप मुझे खाना खिलाने ले जाती हो न, इसी से मैं जीत गई। मैं उसके साथ हँसते हँसते रो देती थी। ममता भी मेरी अच्छी दोस्त हैं, वह भी मुझे भलाई के लिए समझती।

होम में कैसा लगता है

यही मेरी फैमिली (परिवार) है। प्रिंसिपल मैम गले मिलती तो मेरी आंखों में आंसू आते हैं। मैं कोशिश करती हूं कि अपने आसूं रोक लूं। मुझे यह जो फैमिली जैसी फीलिंग मिली है, उसी की वजह से मैं आज यहां तक पहुंची हूं। मैं जब जीत कर भारत वापस आई तो जिस तरह से मेरा स्वागत हुआ, वह मुझे जिंदगी भर याद रहेगा। ढोल बाजे बने। सब लोगों ने हमसे कहा कि तुने हमारा सपना पूरा कर दिया। मुझे माला पहनाई । मैंने कभी सोचा भी नहीं था सपने में भी कि इतनी खुशी मुझे मिल सकती है।

अपने देश के लिए क्या सोचती हो?

मैं सोचती हूं कि जो देश अच्छा हो जाए। हमारे लोग सुधर जाएं, नशा न करें। जो छोटे बच्चे काम करते हैं वह अच्छा नहीं लगता है। उनकी अभी पढ़ाई कि उम्र है। काम हटा के अपना दिमाग पढ़ाई में लगायें तो अच्छा है। सबको जीवन में प्यार मिले, भरपेट खाना मिले।

यहां आकर किन लोगों से मिली?

मैं केजरीवाल से मिली, मैरी कॉम से मिली और एक बॉक्सिंग वाले सर से मिली। एक मेरा इंटरव्यू हुआ था। इंटरव्यू स्कूल कि तरफ से हुआ और प्रियंका चोपड़ा से भी मिली। और मुझे बहुत अच्छा लगा था मुझे सभी बच्चों ने कार्ड बना के दिए थे।

मैं चाहती हूँ कि मैं रिले रेस खेलूं। खेलना सीखना है बीएस मुझे। कोच के लिए पढ़ाई चाहिए होती है। मैं सोचती हूँ खल लूँ और उसी में नौकरी कर लूँ। अब मैं कोशिश करती हूँ।

Inspite of many hurdles Pooja Raju made her mark. She won one gold & two silver medals at special Olympics, 2015 at Los Angeles. She lives in Delhi Rainbow homes & want to achieve new heights in sports. She was born in Etawah, UP. Her parents use to beat her mercilesely. Without love & affection the little soul ran away from home & finally with the help of police officer landed in Rainbow homes. Here she is floursing & smiling.

RAINBOW SATHI • रेनबो साथी • రెయిన్‌బో సాథి • ரெயின்போ சாத்தி • ರೇನ್ಬೊ ಸಾಥೀ • রেইনবো সাথী

Long way to go...सफरनामा

Dear children

I want to tell you the story of Rainbow Homes today! The place you came to on your own and call home today.

Rainbow homes are not simply walls and rooms and did not happen overnight. Ordinary people, state governments, and big international donor agencies came together with unconditional love to build rainbow homes and sneh Ghars in eight states.

Sister Cyril, Principal of Loreta Sealdah Convent in Kolkota started the first Rainbow home. One day in year 2000 she took in a little street girl, raped and left alone outside her gate. Seeing other homeless girls vulnerable to violence and abuse, the Loreto sisters opened the school to them for a safe shelter and food. The girls studied at the same Loreto School where they lived.

Then, in 2002 Ferdinand Van Koolwijk (Ferd) from Nehtherlands a businessman and friend of Sr. Cyril established Partnership Foundation, to raise money for Rainbow Homes. They built rooms and toilets on the roof of the Loreto School. They put in mats and lockers and made it a home for the homeless children. Sr. Cyril gave the name Rainbow Homes when she said, "Children from the streets are free spirits.

That's why we call them Rainbows. A rainbow gives us great joy when we see it in the sky, but we can't pin down a rainbow. We can only commune with it." Ferd and Sr. Cyril motivated Loreto management to open four homes and Fransciscan Sisters to open one home in Kolkota. Today there are six Rainbow Homes for 662 girls in Kolkota.

At the same time Harsh Pappa was trying to make safe living spaces in government and community buildings for street children in Delhi. He met Sr. Cyril and Ferd. They became best friends and decided to open more homes in Delhi and all other cities in India.

Delhi: Our constitution provides every child the right to life, protection, development, education and recreation. Harsh Pappa worked hard to convince Delhi Government to provide safe shelter, food, healthcare and education in Government spaces. At last in 2006 the Dil Se team led by Satya Pillai started two Rainbow Homes for girls and one Sneh Ghar for boys in three old school buildings. Now we have 342 children in Delhi 3 homes.

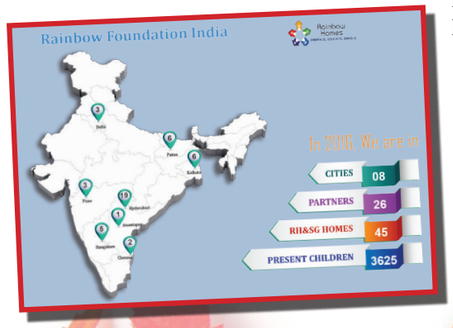

In Hyderabad Ambika and me along with Aman Vedika team opened two Rainbow Homes in 2008 in Government Schools. With the help of a bridge course almost 100 girls wore a school uniform and chappals for the frist time and went to school with their school bags. The Andhra Pradesh government got our advice and opened 20 government schools for rainhow homes and sneh ghars. We started the Balya Mitra network with our friends, APSA, Asritha, APMWS, Bala Tejassu, CRDS, LSN Foundation, Sannihita, Ashray, Spoorty, Sri Education Society and parents. Now there are 19 homes in Hyderabad with 1455 children. In Antapur CRDS, our partner organization has opened 1 Rainbow Home for 110 girls.

In 2010 even Sarva Sikhsha Abhiyan mentioned our rainbow homes as a model institution and sent directions to all state governments to start same kind of homes. We took this document to the government offices in Bangalore, Chennai, Patna and Pune. We made them to provide space in their school buildings for rainbow homes. But we had to work very hard. In Banglore with Father Edward's help we struggled for one year and finally managed to open four rainbow homes in school buildings. Today 364 children are living in the four rainbow homes and one sneh ghar. BOSCO, Need Based India, Vidyaranya, Auxillium Navajeevan are our rainbow homes partners. In Chennai we formed the Vanavil Illangalin Kootamaippu. The Chennai corporation and education department together gave us space in their school buildings to open two rainbow homes for 126 chidren. In Patna, we could not get any government space though we tried to convince the government. So Aman Biradari joined hands with Safeena, BGVS, Mahila Jagaran Kendra and started 4 rainbow homes, in private buildings. Bahadur and Patna team strived a lot and soon the government saw the value of our model and gave us six buildings. We were able to start two sneh ghars for boys and four rainbow homes for girls.

In Pune the newest Rainbow home was started in 2016. The Pune municipal corporation gave us five school buildings. After a survey we are running three rainbow homes with 121 girls with the help of Bajaj Company and the New Vision partner organization.

Children! This is our story – the Rainbow homes' journey. Many people are on this journey with us with trust and confidence. Government officials, school teachers, neighbors, doctors, engineers, bankers, etc. there are a well-meaning Board members who are guiding us, and working for your wellbeing with great love and affection. But you my dear Children is what Rainbow Homes is about! Your big hearts, courage and beautiful spirits is what makes rainbow homes a home for every child that comes here to be safe and happy.

Anuradha Konkepudi

Executive Director, Rainbow Homes

प्यारे बच्चों

आज मैं तुम्हें रैनबो होम की कहानी बताती हूं। वो जगह, जहां आप लोग आए और अब वह आप सभी का घर हो गया है।

रैनबो होम केवल दीवारें और कमरे नहीं हैं और न ही यह रातोंरात खड़ा हुआ। अपने बेलाग प्यार के साथ आम लोगों, बड़ी अंतरराष्ट्रीय दानदाता एजेंसियों और राज्य सरकारों ने मिलकर आठ राज्यों में रैनबो होम और स्नेहघर खड़े किए। कोलकाता में लोरेटो सिलायदह कॉनवेंट की प्रिंसिपल सिस्टर सिरिल पहले रैनबो होम की शुरुआत की थी। साल 2000 की बात है, जब फुटपाथ पर रहने वाली एक बच्ची को बलात्कार के बाद अकेला उनके दरवाजे के बाहर छोड़ दिया गया। वह उसे अंदर ले गईं, लेकिन उन्हें ख्याल आया कि बाकी बेघर बच्चियों के लिए भी इसी तरह हिंसा व शोषण का शिकार होने का खतरा है। इस पर लोरेटो सिस्टर्स ने अपने स्कूल के दरवाजे उनके लिए खोल दिए ताकि उन्हें सुरक्षित छत और खाना मिल सके। वे लड़कियां उसी लोरेटो स्कूल में पढ़ने लगीं, जहां वे रहती थीं।

फिर 2002 में, नीटरलैंड्स के एक बिजनेसमैन और सिस्टर सिरिल के मित्र फर्डिनांड वान कूलविक (फर्ड) ने पार्टनिरशिप फाउंडेशन की स्थापना की ताकि रैनबो होम के लिए धन जुटाया जा सके। उन्होंने लोरेटो स्कूल की छत पर कमरा और टॉयलेट बनवाया। कमरे के भीतर मैट और लॉकर लगाकर उसे बेघर बच्चों का घर बना दिया। सिस्टर सिरिल ने उन्हें रैनबो होम नाम दिया। उन्होंने कहा, च्च्सड़कों पर रहने वाले बच्चे उन्मुक्त होते हैं। इसलिए हम उन्हें रैनबो (इंद्रधनुष) कहते हैं। जब हम किसी इंद्रधनुष को आसमान में देखते हैं तो कितना आनंद मिलता है लेकिन हम उसे जमीन पर नहीं उतार सकते। हम उससे केवल अपने अहसास जोड़ सकते हैं।ज्ज फर्ड और सिस्टर सिरिल ने लोरेटो प्रबंधन को कोलकाता में चार होम खोलने के लिए और फ्रांसिस्कन सिस्टर्स को एक होम खोलने के लिए प्रेरित किया। आज कोलकाता में 662 लड़कियों के लिए छह रैनबो होम हैं।

लगभग उसी समय हर्ष पप्पा भी दिल्ली में फुटपाथ पर रहने वाले बच्चों के लिए सरकारी व सामुदायिक इमारतों में रहने के सुरक्षित ठिकाने बनाने की कोशिश में लगे हुए थे। उन्होंने सिस्टर सिरिल और फर्ड से मुलाकात की। वे बहुत अच्छे दोस्त बन गए और उन्होंने दिल्ली व भारत के अन्य शहरों में ऐसे और होम खोलने का फैसला किया। दिल्ली में 2006 में सत्या पिल्लै की दिल से टीम ने लड़कियों के लिए दो रैनबो होम और लड़कों के लिए एक स्नेहघर खोला। यहां अब कुल मिलाकर 342 बच्चे हैं। हैदराबाद में अंबिका के साथ मिलकर मैंने और अमन वेदिका की टीम ने 2008 में सरकारी स्कूलों में दो रैनबो होम खोले। हैदराबाद में अब 19 होम हैं जिनमें 1455 बच्चे रहते हैं। बैंगलोर में चार रैनबो होम और एक स्नेहघर में 364 बच्चे रह रहे हैं। चेन्नई में 126 बच्चों के लिए दो रैनबो होम हैं। पटना में हम लड़कों के लिए दो स्नेह घर और लड़कियों के लिए चार रैनबो होम शुरू कर पाए हैं। हमारा सबसे नया रैनबो होम 2016 में पुणे में शुरू हुआ। वहां अब हम बजाज कंपनी की मदद से 121 बच्चियों के लिए तीन रैनबो होम चला रहे हैं। बच्चों! यह हमारे रैनबो होम के सफर की कहानी है। इस सफर में विश्वास व भरोसे के साथ कई लोग हमसे जुड़े हैं। सरकारी अधिकारी, स्कूल टीचर, पड़ोसी, डॉक्टर, इंजीनियर, बैंकर्स आदि कई लोग हैं जो हमें राह दिखाते हैं और वे बड़े प्यार और आत्मीयता के साथ हमसे जुड़े हैं।

लेकिन मेरे प्यारे बच्चों रैनबो होम तो आप सबसे है। आपका बड़ा दिल, हिम्मत और अच्छी भावना ही इन रैनबो होम को उन सब बच्चों के लिए घर बनाते हैं जो खुशी और हिफाजत की तलाश में यहां आते हैं।

अनुराधा कोनकेपुडी, एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर, रेनबो होम्स

Our Journey

दया की छांव: सिस्टर सिरील ने की कोलकाता में रखी नींव

सियालदा रेनबो होम में बच्चों का जमघट

लंबी साझेदरी: खुशी रेनबो होम में फर्ड सत्या और बच्चे

हर्ष मंदर किलकारी होम में बच्चों के साथ

बेंगलूरु में रेनबो होम के उद्घाटन के मौके पर

पुणे होम में बजाज टीम के सदस्य कमीशन के साथ

चैन्नई में नए रेनबो होम का उद्घाटन करते कमीशनर

हैदराबाद की जया दुबई में

पटना के स्नेह घर ने बांधी रिश्तों की डोर

दिल्ली की लिली ने पकड़ी नई उचाईयां

Helping Hands

Azim Hashim Premji, Chairman Wipro Ltd. & renowned philanphropist visited Aman Veditka Rainbow homes in Musheerabad, Hyderabad on 16th November 2015. He was moved after having a lively interation with children.

Sania mirza visited musheerabad rainbow homes in hydrabad on 2nd November 2014. She enjoyed her interaction with children & promised to support this nobel cause

Dear Rainbow friends!

I am very happy to write some words to you in this brand-new magazine Rainbow Saathi. It is a wonderful idea to set up a platform where you can share your opinions, feelings and stories with your Rainbow sisters in all the 31 Homes. From my visits, I know that many of you have special talents in story telling and writing poems. Others like to share jokes or give their opinion on some social issue.

I just had an interesting discussion with my son Jip. Today he visited a church, a mosque and a temple with school. In our country, there's a tendency to a growing intolerance towards other religions. His teacher wants to create more respect and understanding amongst the children. So he took them to these different places and Jip and his friends were impressed by the many similarities between the three religions. I told him that in the Rainbow Homes you all come from different backgrounds and that you live happily together. He really liked that you celebrate the festivals of all religions like Diwali, Eid and Christmas in your Home. He thinks this is a great example for the people of the Netherlands.

On 14th November, it's Children's Day. On this day we bring awareness to the rights of all children to education, health care and a safe and dignified life. I hope that it brings people closer together and motivates many around the globe to dedicate some time to children in need. You Rainbow girls are a great example and by sharing your experiences you will inspire others to make the world a better place.

I wish you all a happy Children's Day!
Many greetings from Loes and your other
Partnership Foundation friends

रैनबो के प्यारे दोस्तों!

मैं इस नयी-नवेली पत्रिका रैनबो साथी में आप सबके लिए थोड़ी सी बातें लिखने का मौका मिलने से बहुत खुश हूं। इस पत्रिका के रूप में एस ऐसे मंच का ख्याल बहुत शानदार है जहां आप सभी 31 होम में अपनी रैनबो बहनों के साथ अपने विचार, अहसास और कहानियां साझा कर सकती हैं। इन रैनबो होम में अपनी यात्राओं के जरिये मुझे इस बात का पता है कि आप में से कई के पास कहानियां लिखने और कविताएं रचने की खास प्रतिभा है। कुछ लोग चुटकुले सुनाना पसंद करते हैं तो कई तमाम सामाजिक मुद्दों पर अपनी राय रखते हैं। 14 नवंबर को बाल दिवस है। इस दिन हम सभी बच्चों के शिक्षा, स्वास्थ्य देखरेख और सुरक्षित व सम्मानित जीवन के अधिकार के प्रति जागरूकता लाने की कोशिश करते हैं। मुझे उम्मीद है कि यह दिन लोगों को एकजुट करेगा और दुनियाभर में तमाम लोगों को जरूरतमंद बच्चों के लिए कुछ वक्त देने के लिए प्रेरित करेगा। रैनबो की आप सभी साथी एक अच्छा उदाहरण पेश कर रही हैं। अपने अनुभव साझा करके आप बाकी सभी को इस दुनिया को बेहतर बनाने के लिए प्रेरित करेंगे।

आप सभी को बाल दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

लुईस और पार्टनरशिप फाउंडेशन
के बाकी सभी दोस्तों की तरफ से प्यार भरा अभिवादन

Through My pen: *My journey, My world*

"Now I am Happy"

Shraddha Santosh Pawar, 5th standard, 11 years

New Vision Rainbow Home Pune.

My name is Shraddha Santosh Pawar. When I lived at home my father would go to work so I had to be alone at home. I did not like staying alone at home. I attended a school at the labour camp where we lived.

Then our school teacher Rekha madam admitted me in the Rainbow Home. I was 10 years old at that time. I started liking to live in the Rainbow Home. There were several activities taught in the home and I learnt many things through these activities. I had not gone to school for 1 year before coming to Rainbow Home. So I did my studies here. At home I had to sleep on a mat but now here I sleep on a mattress. There is no dearth of food here. I have become smarted and good at studies after going to school regularly. We are taken for outing to garden every Sunday. I also went for the summer camp. WE went to Katraj snake park and zoo and really enjoyed it. I get all the things that I need and I really like to stay in the Rainbow Home. Now I am happy.

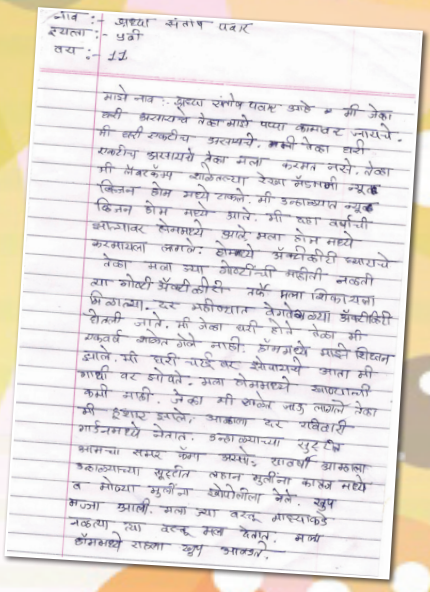

शारदा संतोष पवार, 11 वर्षीय, 5वीं कक्षा

न्यू विजन रेनबो होम पुणे

मेरा नाम शारदा संतोष पवार हैं, जब में घर पर अपने पिता के साथ रहती थी और वह काम पर चले जाते थे तो मैं अकेली रह जाती थी। मुझे घर पर अकेला रहना पसंद नही था। मैं अपने घर के पास लेबर कैंप में बने स्कूल में जाती थी। मेरी स्कूल की अध्यापिका रेखा मैडम मुझे रेनबो होम में दखिल करा दिया तब में 10 साल की थी। मुझे रेनबो होम में मुझे रहना पसंद आने लगा, होम में मुझे बहुत सारी चीजे सीखने को मिली। रेनबो होम आने से पहले में एक 1 साल तक स्कूल नही गई थी, अब मैंने यहां पढ़ाई शुरू की है। अपने घर पर में चटाई पर सोती थी, यहां गद्दे पर आराम से सोती हूं। यहां खाने की कोई कमी नही है, यहां आकर में स्मार्ट हो गई हूं, पढ़ाई में भी तेज हो गई हूं। हर रविवार को हमें पार्क में घूमाने ले जाते हैं। मैं समर कैंप भी गई थी। हम कटराज स्नेक पार्क और चिड़ियाघर गए थे जहां मुझे बहुत मजा आया। जरूर की सभी चीजे आराम से मिल जाती हैं, और मुझे रेनबो होम में रहना अच्छा लगता है।

Najma Khatoon, 11 years

Victoria Institute, kolkata

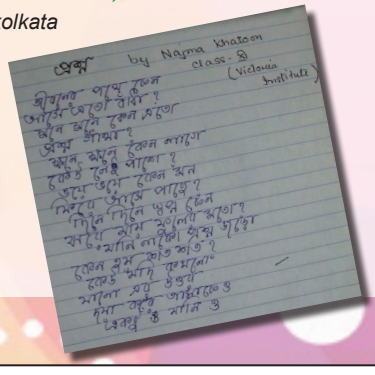

Why are there so many hurdles in our life
Why so many questions arise
Why do I think that there is no one beside me
Why my dreams are all getting shattered
Why so many doubts arise in my mind
Why thousands of question arise in my mind
If anybody knows the answer then can you
Clear it to me

SHIVAM,
8TH STANDARD
Aman Biradri Sneh Ghar,
Amla tola, Danapur, Patna

रोटी

दो टुकड़े रोटी के लिए।
घर छोड़कर आता है।
कुछ नही मिला तो।
वटपस जंक्शन पर रूक जाता हूं।
दुर से आते देख किसी आदमी को।
स्वं ही लग जाता है।
उनको बापु भईया अठाता हुं
मांगता हुं बदले मं मजदुरीया।
तो गालियां भी सुन लेता हूं
बेकशूर होते हुए भी।
जेल चला जाता हूं।
फिर पटना जंक्शन पर
वापिस आता हूं
निलु और नीतू दीदी के साथ
स्नेह घर होम चला आता हूं।

शिवम कुमार
अमन बिरादरी स्नेह घर, पटना

The Bread

For to peace of bread
I come, left behind the home
If got nothing then
Stops at Patna junction
Look at any coming person
from distance
I engage myself by self
Call them babu and bhaiya
Take their luggage on head
And asked wages against it
But I accept their abuses
And being innocent I go to jail
And come back to Patna
Junction
And come to Sneh Ghar with
Nitu and Nilu didi

PROUD TOBE A RAINBOW HOME GIRL

ANJALI,
14 YEAR'S
Need Base India Rainbow
Home Bangalore

I am Anjali 14 year's old, living at Need Base India Rainbow Home Bangalore since 2011. Here I would like to share my life story:
When I was small, I was living with my parents. My both parents were alcoholic and father was not taking responsibility of me. I have an elder sister Manjula and younger sister Venila. I was not getting proper food every day and I was asking my neighbours for one meal, otherwise I was bringing mid day meal from govt. school for night dinner. I was admitted in school but I used to roaming on the street instead of going to the school.
I and my sisters had struggled a lot by not having proper shelter to stay. Hence once we were on the street and the Rainbow teachers found me and my sister there. The teachers convinced my parents and brought to Rainbow Home. After some days my mother died due to heavy consumption and Jaundice. But my father is still alcoholic and once in a year he comes to see me.
After admitting in Rainbow Home I joined bridge course and learnt to read and write basics. Then I was admitted to 4th std. to

दिल्ली के खुशी होम में स्ट्रीट आर्ट

govt. school Doddabetta Halli Bangalore. Hence I studied very well and now I am studying in 9th std. at Govt. School Jalahalli Village Bangalore.
Every day I am attending tuition classes at Rainbow Home and monthly writing tests. So I have improved a lot and coming 1st to the class. In Rainbow Home September month test I have scored 127 marks out of 150. I am very happy at Rainbow Home and I am getting all the opportunities and I have safety, getting love and affection here. I am very proud to say that "I am a Rainbow Home Girl". I am very grateful to Rainbow Home and everyone who have helped me to have a best life at Rainbow Home.

चौदह नवंबर

फुटपाथ पर रहते बच्चे।
भूख से बेहोश सी छोटी बहन के
भाई का हमारी आजादी से एक मार्मिक सवाल।

बच्ची है नन्हीं सी, सुंदर है परियों सी
जिस दिन से भूखी है, वो चौदह नवम्बर थी

थोड़े चावल इक रोटी, बस इतना कहती
एक रंग की इक रोटी, तो तीन तिरंगे की
क्या होती आजादी, वो मुझसे है कहती

थोड़ा थोड़ा रोज मरे, पर जीना है कहती
गोद में खेले वो मेरी दुनियां सपनों की
क्या जिंदा रहूंगी मैं, वो मुझसे है कहती
क्या जिंदा रहूंगी मैं, वो हमसे है कहती

विनय-चारूल

सामाजिक सरोकार

क्यों लड़े हिंदुस्तान पाकिस्तान

इमराना, दिल्ली

मेरा नाम इमराना है मैं 16 अक्टूबर 2016 को में एक ट्रेनिंग में गई यह यूथ ट्रेनिंग थी जहां लोकतांत्रिक अधिकारों और भोजन के अधिकार के बारे में जानकारी दी गई। इस ट्रेनिंग में रेनबो होम से बच्चों को इस मकसद से भेजा जाता है कि उन्हें समाज और हमारी देश दुनिया के बारे में पर्याप्त जानकारी मिले। हमें यह पता हो की देश दुनिया में क्या चल रहा है। हमारे अधिकार और कर्तव्य क्या है। इस ट्रेनिंग में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला जो में आपके साथ बांटना चाहती हूं।

अपना अधिकार: अगर कोई व्यक्ति बेलदारी या कठिन हाथ का काम करता है तो उसके हाथ के निशान (Thumb Impresion) मिट जाते है ऐसे में उसका आधार कार्ड भी काम नही करता। इन मजदूरों को राशन लेने में बहुत मुश्किल आती है। मशीन उनकी उंगलियों का निशान नही ले पाती और वे अपने अधिकार से वंचित रह जाते है।

वे बहुत लोगों के पास मदद के लिए जाते है पर कोई उनकी मदद नही करता वे ज्यादा लड़ भी नही पाते क्योंकि वह ज्यादा पढ़े लिखे भी नही होते।

पाकिस्तान और हिंदुस्तान के रिश्तो को लेकर बहुत ज्यादा लोग बोल रहे है। लोग कहते है कि पाकिस्तान खराब है और वह हमारे देश के लोगों और सेनाओं को मार रहा है। लेकिन यह जरूरी नही की पाकिस्तान खराब हो, हमारा हिंदुस्तान भी पाकिस्तान की सेनाओं को मारता है। किसी को भी मारना अच्छा नहीं है। दोनों ही देश अच्छे हैं और दोनों ही देश खराब। हमें सोचना है कि लड़ने से हमें क्या हासिल होगा।

मां की नजर से

ट्रेन की बोतलें बेचने से होम की 'मम्मी' तक का सफर

रुक्कैया किलकारी होम दिल्ली में पिछले 10 साल से काम कर रहीं हैं। उनका बड़ा बेटा उनके साथ नहीं रहता उनका छोटा बेटा 'हौसला' प्रोजेक्ट में नौकरी करता है और उनकी दो बेटियां उनके साथ ही किलकारी होम में रहती हैं। दोनों एक ही कक्षा में पढ़ती हैं। एक बेटी पढ़ाई में अच्छी है और दूसरी डांस में। यहां सभी उन्हें मम्मी कह कर पुकारते हैं और सभी बच्चों को वह अपने बच्चों जैसा ही प्यार देती हैं। घर की सबसे मेहनती सदस्यों में से एक हैं रुक्कैया मम्मी।

सराए रोहिल्ला होम जब खुला था तब से मेरे राजू को वहीं डाला था। जब होम खुला तब मैं दिल्ली रेलवे स्टेशन पर काम कर रही थी– ट्रेन से बोतल निकाल कर बेच रही थी। वहां पर लकी भैया थे, जो सब जानते थे– उसने बोला था चारों बच्चों को वहां डाल दो।

बड़ा बेटा भी साथ था?

नहीं वह अपने पापा के साथ था। दो बच्चों को मैंने यहां क्लास 1 में डाला अब वह क्लास 9 में हैं। अभी समीना जिद् करती है पढ़ाई में अच्छी है ड्राइंग और डांस भी करती है। मेरा राजू पांचवीं पढ़कर बंगाल से आया था फिर यहां बटरफ्लाईज में पढ़ा था। फिर गुडगांव गया तो वहां पढ़ाई छूट गया। फिर उम्मीद आया तो पढ़ाई शुरू किया। अब काम करता है।

यहां कैसा लगता है?

यहां बहुत मदद मिलती है। और जगह भी रहती थी पर घर जैसे कोई नहीं देखता था। मुझे सबसे खराब लगता है कि जब बच्चे यहां रहते हैं तब हम उनको बिलकुल नहीं मारते और प्यार से रखते हैं पर जैसे ही वह 18 साल के हो जाते हैं चाइल्ड वेल्फेयर कमेटी उनका साथ छोड़ देती है। तब बच्चे का सहारा कोई नहीं होता, बच्चा अकेला होता है और कुछ बच्चे बुरा करते हैं तो संस्था पर नाम आता है।

(दीप्ति श्रीवास्तव से बातचीत पर आधारित)

Rukyia is Working in Delhi Kilkari Homes from last 10 years. She has a long personal-emotional relation with homes. Her two daughter's are stay with her in Kilkari homes. One daughter excel in studies and other one in dance. Earlier she was a rag picker, use to collect waste bottles from the train to survive. She was one of the first to join in Sarai Rohilla home. Her two daughter & one son got shelter an education here. Now Rukyia is loving Mummy of home.

(As per told to Deepti Shrivastava)

Through My pen: *My journey, My world*

"I want to become Chief Minister"

R.Priyadharshini, 6th standard
ARUN Rainbow home, AKP, CHENNAI, Tamilnadu.

I am R.Priyadharshini, studying 6th standard. My father Rajendran passed away few years back. I used to stay with my mother & younger brother on street. I don't get proper food to eat there. Nearby people use to give us food but only for one-two times. My mother doesn't have money. I neither brushed nor bathe daily. We don't even have a soap. Mother used to beg. My younger brother used to cry daily due to hunger. When we sleep at night I felt very unsecured. My mother was suffering a lot. At that time one new person came and met my mother and admitted me in Rainbow home. I came to Rainbow on 26.06.2013 and they immediately provided me brush, soap, clothing, towel, pillow and other things. When I saw it I felt very happy. I didn't get all these things before; my mother was unable to buy all these things to me. I never went to a school before. When I was admitted in rainbow home they admitted me in Residential Special Training Center in II standard and a week later admitted in 3rd standard in Chennai Middle School. In school I earned goodwill from my teacher. Our teacher used to appreciate me every day. She also spoke with my mother & told about my progress. They do play with me, it makes me happy. Because when I was staying in bus stop no child comes and plays with me. I will be staring those children who play nearby.

I don't have any worries at present which I had before. Though I was homeless for so many years I don't have the worry about it because I am staying now in a secured place at Rainbow home. But my mother is staying at bus stop which worries me very much. My desire is to study well and buy a home then will gift it to my mother; I have to look after my mother very well. I want to become the Chief Minister of the state.

मैं मुख्यमंत्री बनना चाहती हूं

आर. प्रियदर्शनी, कक्षा 6
अरुण रेनबो होम, एकेपी, चैन्नई, तमिलनाडु

मेरा नाम आर. प्रियदर्शिनी है और मैं छठी कक्षा में पढ़ रही हूं। मेरे पिता राजेंद्रन कुछ साल पहले गुजर गए थे। मेरा एक छोटा भाई है। हम लोग अपनी मां के साथ रहते थे। हम सड़कों पर दिन गुजारते थे और फुटपाथ पर सोते थे। खाने को भी कुछ नहीं मिलता था। मुझे न तो ब्रश करने को मिलता था और न ही रोज नहाने को। मां के पास पैसे थे नहीं। वह भीख मांगकर हमारा पेट भरने की कोशिश करती थी। उसे हम लोगों का ख्याल रखने के लिए बड़ी तकलीफ उठानी पड़ती थी। मेरा भाई भूख के मारे दिनभर रोता रहता था। रात में जब हम सोते थे तो डर लगता रहता था। उन्हीं दिनों एक व्यक्ति आकर मेरी मां से मिला और फिर हमें रैनबो होम में भर्ती करा दिया गया। मैं जब 26 जून 2013 को यहां आई तो मुझे ब्रश, साबुन, कपड़े, तौलिया, तकिया व बाकी चीजें मिल गईं। मुझे उन सारी चीजों को देखकर बहुत खुशी हुई। जिंदगी में पहली बार इन सब चीजों का इस्तेमाल करने का मौका मिल रहा था। मैं पहले कभी स्कूल नहीं गई थी। जब रैनबो होम आई तो फिर मुझे पहले तो एक हफ्ते के लिए रेजिडेंशियल स्पेशल ट्रेनिंग सेंटर में दूसरी क्लास में भर्ती कराया गया फिर चेन्नई मिडिल स्कूल में तीसरी क्लास में डाल दिया गया। मुझे स्कूल में अपनी टीचर से काफी तारीफ मिली। मेरे यहां काफी दोस्त भी बन गए हैं जो मेरे साथ खेलते हैं। यह मुझे काफी अच्छा लगता है क्योंकि जब मैं फुटपाथ पर रहती थी तो कोई भी मेरे साथ नहीं खेलता था। मुझे अब कोई चिंता नहीं है लेकिन मेरी इच्छा है कि अच्छा पढ़कर एक घर खरीदूं और अपनी मां को तोहफे में दे दूं। मैं अपने राज्य का मुख्यमंत्री बनना चाहती हूं।

Newsletter of Rainbow Foundation India (for private circulation only)

Open Hearts, Open Gates...

Rainbow Foundation India works with Rainbow Homes (for Giirls) and Sneh Ghars (for Boys) to empower children formerly on the streets to reclaim their childhood by providing Comprehensive Care, Food, Shelter, Health and Education.

Anna Dhara Campaign

The Anna Dhara campaign is an attempt to reach out to supporters like you from the civil society to make a difference in the lives of children living in Rainbow Homes and Sneh Ghars located in 23 Govt Schools in Hyderabad.

- providing minimum of a day's meal for 100 children
- share life nourishing values with children

Rainbow Homes EMBRACE. EDUCATE. ENABLE.

Anuradha Konkepudi, Executive Director Email: reach@rainbowhome.in
Rainbow Foundation India, 1-1-711/c/1, 1st floor,
Opp. vishnu Residency, Gandhinagar, Hyderabad - 80 Office No: 040-65144656